6 भारत में धर्म (Religion in India)

भारत में धार्मिक समुदाय (Religious Communities in India)

प्राचीन काल से ही भारत एक बहुधर्मी समाज (Ploytheistic Society) रहा है। 1931 की जनगणना के अनुसार भारत में 10 धार्मिक समूह थे। इनमें हिन्दू, सिक्ख, जैन, बौद्ध, जोरास्ट्रियन, मुस्लिम, ईसाई, यहूदी और अन्य जनजातीय एवं गैर-जनजातीय धार्मिक समूह सम्मिलित थे। 1961 की जनगणना में केवल सात धार्मिक कोटियों को अंकित किया गया था जो हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, सिक्ख, बौद्ध, जैन और अन्य धर्म तथा सम्प्रदाय के रूप में कोटिबद्ध किये गये थे।

2001 की जनगणना के अनुसार भारत में 80.5 प्रतिशत लोग जिनमें अनुसूचित जातियाँ और अनुसूचित जनजातियाँ भी सम्मिलित हैं; हिन्दू धर्म के अनुयायी हैं। हिन्दू धर्मावलम्बी सभी राज्यों में फैले हुए हैं लेकिन पाँच राज्यों-जम्मू और कश्मीर, मिजोरम, मणिपुर, नागालैण्ड और लक्षद्वीप में वे अल्पसंख्यक हैं। हिन्दू धर्म अपने परिवेश में बहुत विशाल है और समस्या यह है कि इसकी परिभाषा में भी कोई स्पष्टता नहीं है। फिर भी सामान्य रूप से हिन्दुओं को तीन सम्प्रदायों में बाँटा जाता है। ये सम्प्रदाय हैं-(1) वैष्णव, (2) शैव और (3) शाक्त।

भारत में वैष्णव सम्प्रदाय के लोग शैव और शाक्त सम्प्रदाय के देवताओं की भी पूजा-अर्चना करते हैं लेकिन उत्तरवैदिक काल में ये सम्प्रदाय एक-दूसरे के घोर विरोधी थे। संस्कृत का एक श्लोक है जिसका अर्थ है कि एक वैष्णव धर्मावलम्बी को सामने मस्त हाथी आ जाने पर भी उससे बचने के लिए शिव मन्दिर में प्रवेश नहीं करना चाहिए। हाथी के पाँवों के नीचे दबकर मर जाना उसके लिए अच्छा होगा इसकी अपेक्षा कि वह जान बचाने के लिये शिव मन्दिर की शरण ले। देसी रियासतों में प्रत्येक राजा का अपना एक सम्प्रदाय था और अपने सम्प्रदाय के उपास्य देव का वह मन्दिर बनाता था। सभी राजनैतिक व धार्मिक क्रियाकलापों का केन्द्र यह सम्प्रदाय हुआ करता था।

भारत में हिन्दू और इस्लाम धर्म के अतिरिक्त जैन और सिक्ख धर्म भी हैं। सामान्यतया सिक्ख धर्म के अनुयायी बड़ी संख्या में पंजाब में मिलते हैं और इसी तरह जैन धर्म के लोग गुजरात, हरियाणा, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार आदि में अधिक पाये जाते हैं। यद्यपि ये दोनों धर्मावलम्बी उत्तर और मध्य क्षेत्रों में मिलते हैं लेकिन सिक्खों के लिये यह सर्वविदित है कि वे दुनिया के हर कोने में पाये जाते हैं। यह एक उद्यमी समुदाय है। इसी प्रकार जैन धर्मावलम्बी भी उद्यमी हैं और वे दक्षिण भारत में भी अपना प्रभाव रखते हैं।

भारतीय अल्पसंख्यकों में ईसाई और पारसी धर्मावलम्बी भी सम्मिलित हैं। ईसाईयों का केन्द्रीकरण उन स्थानों पर ज्यादा है जहाँ ब्रिटिश शासन ने अपना व्यवसाय या प्रशासन केन्द्रित किया था। इस अर्थ में पश्चिमी बंगाल तथा केरल में ईसाई बड़ी संख्या में पाये जाते हैं। भारत में धार्मिक समुदायों (Religious Community) के संदर्भ में आदिवासी धर्म के अनुयायियों का उल्लेख भी महत्वपूर्ण है। आदिवासी धर्म जनगणना में पृथक् रूप से अंकित किया जाता है। प्राय: जनगणना में काम करने वाले हिन्दू गणक आदिवासियों को हिन्दू धर्मावलम्बियों की श्रेणी में रखते हैं फिर भी कुछ राज्यों में जहाँ ईसाई मिशनरियों का प्रभाव है वहां आदिवासियों ने ईसाई धर्म को अपना लिया है। मध्य प्रदेश, उड़ीसा, बिहार, गुजरात, झारखण्ड और राजस्थान में ईसाई आदिवासियों की संख्या अधिक है।

पारसी धर्मावलम्बियों की संख्या बहुत कम है। वे केवल 70,000 के लगभग हैं और इनका मुख्य निवास दक्षिण गुजरात और महाराष्ट्र है। पारसी अग्नि की पूजा करते हैं और मुख्य रूप से यह व्यवसायी समुदाय माने जाते हैं।

बौद्ध धर्म के अनुयायियों की संख्या मात्र 0.76 (2001) प्रतिशत है। इनमें कोई जाति-प्रथा नहीं हैं और इनका मुख्य केन्द्र बिहार, हिमाचल प्रदेश और जम्मू-कश्मीर है।

अंत:धार्मिक क्रियाएँ और उनकी अभिव्यक्ति (Inter Religious Practices and their Expression)

भारतीय समाज में दो प्रकार की धार्मिक परम्पराएँ (Religious Practices) दिखाई देती हैं। प्रथम, वे धर्म जिनका उदय भारत में हुआ जैसे-बौद्ध, जैन और सिख धर्म तथा द्वितीय, वे जिनका जन्म तो अन्य देशों में हुआ लेकिन धीरे-धीरे वे भारतीय समाज में फैल गए जैसे-इस्लाम, ईसाई और जरथुस्त्र धर्म। विविध धर्मों का सह-अस्तित्व भारतीय समाज में धार्मिक विश्वासों और मतों की बहुलता तथा जीवन शैलियों की विविधता को प्रदर्शित करते हैं। इन विविध जीवन शैलियों में सामंजस्य के अभाव के कारण आधुनिक भारत में धार्मिक अंत:क्रियाएँ (Religious Interactions) कुछ नकारात्मक परिणामों को उत्पन्न कर रही हैं।

परम्परागत भारतीय समाज में जहाँ धार्मिक मूल्यों की प्रबलता, आध्यात्मिकता, पारलौकिकता, सोपानिकता तथा सत्ताधारी के प्रति नम्रता आदि गुणों पर अधिक बल दिया जाता था वहीं आधुनिक

धर्मनिरपेक्ष भारतीय समाज में विचारों की स्वतंत्रता, भौतिक संस्कृति की प्रधानता, सांसारिकता की भावना तथा सत्ताधारी के सामने नम्रता के स्थान पर विद्रोह का महत्व बढ़ा है। इस प्रकार आधुनिक भारतीय समाज ने व्यक्ति के विचारों के उन तत्वों को स्वीकार कर लिया है जो ईसाई, इस्लाम व सिक्ख धर्मों की परम्परा माने जाते हैं। समकालीन भारत में एकता की भावना विविधता से ऊपर है। पहले जब अन्य सांस्कृतिक समूह (Cultural Group) स्वदेशी धार्मिक विश्वासों के सम्पर्क में आते थे, वे अपनी पहचान बनाए रखते हुए क्षेत्रीय सांस्कृतिक दशाओं को भी अपना लेते थे। इस प्रकार के सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश में विविधता में एकता की अवधारणा स्थापित हुई। परंतु, समकालीन भारतीय संदर्भ में प्रतीत होता है कि विविध धर्म एक दूसरे से समायोजन करना नहीं चाहते। प्रारम्भ में कुछ ईसाई धर्म प्रचारकों ने कुछ लोगों, विशेष रूप से जनजातियों और निम्न जातीय हिन्दुओं को ईसाई धर्म में परिवर्तित कर लिया था। आज कुछ हिन्दू कट्टरपंथियों ने, विशेष रूप में विश्व हिन्दू परिषद् तथा बजरंग दल के सदस्यों ने, सम्परिवर्तित ईसाइयों और मुसलमानों को पुनः हिन्दू धर्म में लाने का प्रयास किया। हाल में ही ईसाइयों पर हमले, दिसम्बर 1998 में गुजरात व जनवरी 1999 में उड़ीसा में धर्म परिवर्तित हिन्दुओं को पुनः हिन्दू धर्म की मुख्य धारा में वापस लाने के प्रयास भी इसके प्रमाण हैं।

अलगाववादी, साम्प्रदायिक शक्तियां व संकीर्ण दृष्टिकोण विघटनकारी परिणाम उत्पन्न करते हैं। स्वतंत्रता के पश्चात् धर्मान्धता का पुनर्उदय 1970 के दशक से हुआ है। कुछ हिन्दू व मुसलमान धर्मांध लोग अपने धर्म विरुद्ध कार्यों के लिए धर्म को ही साधन के रूप में प्रयोग करते हैं। भिन्न धर्मों के लोग साम्प्रदायिक दंगों और तनावों के लिए एक दूसरे को दोष देते हैं। भारत पाकिस्तान विभाजन के समय विभिन्न धर्मों के हजारों लोगों की हत्या के लिए हिन्दू व मुसलमान एक दूसरे पर दोषारोपण करते हैं। 1960 व 1964 के साम्प्रदायिक दंगों के लिए सदैव हिन्दू और मुसलमानों ने एक दूसरे को उत्तरदायी ठहराया है। 1984 में इन्दिरा गांधी की हत्या के बाद हुए दंगों में सिक्खों ने दिल्ली, उत्तर प्रदेश व कई अन्य राज्यों में सिक्खों की हत्या के लिए हिन्दुओं पर दोषारोपण किया। 1993 में अयोध्या में एक 'विवादास्पद निर्माण' को गिराने व महाराष्ट्र दंगों में मुसलमानों की हत्या के लिए मुसलमानों ने हिन्दुओं को दोषी ठहराया। 1998-99 में ईसाइयों ने गुजरात व उड़ीसा में ईसाइयों पर हमले के लिए हिन्दुओं को उत्तरदायी ठहराया। ऐसी स्थितियों का राजनीतिक लाभ उठाने के लिए स्वार्थी राजनेताओं द्वारा धर्म एक हथियार के रूप में प्रयोग किया गया। पंजाब में भिण्डरावाला आंदोलन और कश्मीर में कुछ मुसलमानों का पाकिस्तान के पक्ष का रुझान, धार्मिक अल्पसंख्यकों की अतिवादिता को प्रदर्शित करते हैं। भारतीय जनता पार्टी के एक अनुभाग द्वारा 'हिन्दुत्व' के नारे ने मुस्लिमों और ईसाइयों में बहुसंख्यकों का भय और हिन्दू विरोधी भावना को और सशक्त बनाया है।

इन तनावों के बावजूद भारतीय संदर्भ में विविधता में एकता और सहिष्णुता देखी जाती है। अंग्रेजों ने हिन्दुओं, मुसलमानों और सिक्खों की धार्मिक भावनाओं को भड़का कर उन्हें विभक्त करने का प्रयत्न किया लेकिन स्वतंत्रता संग्राम में वे एक रहे। आज भी अन्तःधार्मिक विवाह (Inter-Religious Marriage) हो रहे हैं तथा त्यौहार मिलकर मनाए जाते हैं। मध्यकालीन भक्तों (कबीर, नामदेव, रविदास, नानक, चैतन्य, आदि जिन्होंने धार्मिक बंधनों से ऊपर उठने का प्रयत्न किया, एक सूत्र में पिरोने वाली बोली प्रचारित की तथा कर्मकाण्डवाद की निन्दा की) के समान ही स्वतंत्रता के बाद गांधी, नेहरू जैसे प्रगतिशील नेताओं ने मानव एकता पर बल दिया। आज भारत का कोई अपना अधिकृत धर्म नहीं है। संविधान सभी धर्मों को स्वतंत्रता प्रदान करता है। भले ही कुछ राज्यों में राजनैतिक सत्ता हथियाने के लिए धर्म का सहारा लिया जाता है परंतु अधिकांश लोग धर्म आधारित इस राजनीति के नकारात्मक परिणामों को अच्छी तरह समझ गए हैं। कुछ लोग मानते हैं कि हमारे देश में ऐसी स्थिति नहीं है जिसमें भिन्न धर्म एक दूसरे के साथ समंजन करें। उनके अनुसार कुछ ऐसे धर्म हैं जो व्यक्तिवाद को प्राथमिकता प्रदान करते हैं (जैसे, इस्लाम, ईसाई) और दूसरे ऐसे भी धर्म हैं जो दैवी अस्तित्व के अवैयक्तिक स्वरूप (Impersonal form) को मान्यता देते हैं। ऐसे भी धर्म हैं जिनके पास देवत्व का आधारभूत सिद्धांत नहीं है जबकि अन्य ऐसे धर्म हैं जो देवत्व के सिद्धांत पर ही आधारित हैं लेकिन यह केवल विविधता दर्शाता है न कि असहिष्णुता। परंतु, समकालीन भारत में धार्मिक विचार राजनीति से जुड़ने लगे हैं। प्रगतिशील विचारों के कुछ व्यक्ति हैं जो सहिष्णुता व सामंजस्य के आधार पर नई सामाजिक संरचना बनाना चाहते हैं और अन्य लोग भी हैं जो रूढ़िवादी व प्रतिक्रियावादी विचारधारा (Reactionary Idealogy) के हैं, जो वर्तमान सामाजिक ढाँचे में कोई परिवर्तन नहीं चाहते हैं। इस प्रकार दो द्वन्दात्मक विचारधाराएं साम्प्रदायिक दंगों और संघर्षों को जन्म देती हैं। अतः इन स्थितियों में संघर्षरत धार्मिक विचारधाराओं से समझौता करना सरल नहीं है और धार्मिक वैचारिकी के आधार पर विरोधी समूहों के बीच स्वतंत्र अन्तःक्रिया (Interaction) निकट भविष्य में सहज एवं सामान्य होने की प्रबल सम्भावनाओं को प्रदर्शित नहीं करती।

भारत में धार्मिक पुनःप्रवर्तनवाद (Religious Revivalism India)

धार्मिक पुनःप्रवर्तनवाद या पुनरुत्थानवाद एक नवीन सामाजिक परिघटना के तौर पर उभरकर सामने आया एक सामाजिक तथ्य है। यहां पुनरुत्थान या पुनःप्रवर्तन का तात्पर्य अपनी खोई प्रतिष्ठा को पुनः प्राप्त करने से है। उल्लेखनीय है कि औद्योगीकरण, नगरीकरण, विज्ञान एवं तकनीक के विकास तथा आधुनिक मूल्यों के व्यापक प्रचार-प्रसार ने एक सामाजिक संस्था के रूप

में धर्म को काफी क्षत किया था। किन्तु, पिछले कुछ दशकों से धर्म पुनः अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा को प्राप्त करने की दिशा में तेजी से अग्रसर है और इसे अवधारणा के रूप में 'धार्मिक पुनःप्रवर्तन या पुनरुत्थानवाद' के नाम से जाना जाता है।

यद्यपि 1970 के बाद विकसित धार्मिक पुनःप्रवर्तनवाद वर्तमान समय में संपूर्ण दुनिया में विचार का विषय बना हुआ है, किन्तु इसका भरतीय संदर्भ स्वयं में विशेष स्थान रखता है। भारत प्रारंभ से ही एक धर्म आधारित सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक व्यवस्था का पोषक रहा है। किन्तु, सदियों की अधीनता, समाज में व्याप्त तमाम कुरीतियों, कुप्रथाओं तथा बाह्य आडम्बरों के कारण धर्म की साख लगातार गिरती रही और जबकि भारतीय संविधान ने धर्मनिरपेक्षता को आधारभूत विशेषता के रूप में आत्मसात किया; एक संस्था के रूप में धर्म काफी आहत हुआ।

यद्यपि भारत में धार्मिक पुनःप्रवर्तनवाद की शुरुआत औपनिवेशिक काल के दौरान ही राजा राममोहन राय, स्वामी दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद जैसे सामाजिक-धार्मिक सुधारवादियों के नेतृत्व में हो चुकी थी, किंतु उनका प्रयास सुधारवादी या तमाम कुरीतियों व कुप्रथाओं को दूर कर हिन्दू धर्म का विशुद्धीकरण कर उसके आदर्श स्वरूप को स्थापित करना था। वर्तमान में जिस धार्मिक पुनःप्रवर्तनवाद की बात की जाती है उसकी शुरुआत 1970 के दशक में हुई है।

भारत में धार्मिक पुनःप्रवर्तनवाद के कारण (Causes of Religious Revivalism in India)

भारत में धार्मिक पुनःप्रवर्तनवाद एक साथ कई कारकों का समेकित परिणाम है। इन कारकों को निम्नांकित शीर्षकों के अंतर्गत स्पष्ट किया जा सकता है:-

1. ***मूलतत्ववाद का प्रभाव (Effect of Fundamentalism):*** धार्मिक मूलतत्ववादी दृष्टिकोण का मूल तात्पर्य कट्टरता का संकेत करता है। स्वधर्म की श्रेष्ठता व अन्य धर्मों के प्रति हीन व नकारात्मक भावनाओं तथा प्रदर्शनों का प्रचार-प्रसार धार्मिक मूलतत्ववाद के प्रमुख औजार हैं। धार्मिक पुनःप्रवर्तनवाद के विकास में इसका महत्वपूर्ण प्रभाव यह है कि यह पहचान के संकट की विश्वव्यापी समस्या का एक निदान प्रस्तुत करता है और व्यक्ति को इसके लिए अपने धर्म से जुड़े रहने को प्रेरित करता है।
2. ***धार्मिक सुधार संगठनों की सक्रियता (Activism of Religious Reform Organizations):*** औपनिवेशिक काल के दौरान तमाम सामाजिक, धार्मिक सुधारकों ने 'धर्म' संस्था में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया था। इस क्रम में उन्होंने विभिन्न संस्थाओं की भी स्थापना की थी जो आज भी अपने उद्देश्यों की पूर्ति हेतु सक्रिय हैं। इन संगठनों अथवा संस्थाओं में ब्रह्म समाज, आर्य समाज, प्रार्थना समाज, रामकृष्ण मिशन आदि प्रमुख हैं। जो लोगों को अपने धर्म से जुड़े रहने के लिए अभिप्रेरित कर रहे हैं।
3. ***धार्मिक नेताओं का प्रभाव (Influence of Religious Leaders):*** आज भारत में कई धार्मिक नेता धर्म के पुनःप्रवर्तन के लिए कार्य कर रहे हैं जो प्रवचनों, शिविरों आदि के माध्यम से अपने उद्देश्यों की पूर्ति में लगे हैं। इन धार्मिक नेताओं में मुरारी बापू, संत आशाराम बापू, श्री श्री रविशंकर, बाबा रामदेव आदि का नाम प्रमुखतः उल्लेखनीय है।
4. ***धर्म का बाजारीकरण (Marketization of Religion):*** आज धर्म का बाजारीकरण जोरों पर है। आस्था और संस्कार जैसे तमाम टीवी चैनल, धार्मिक कार्यक्रमों के माध्यम से अपनी टी.आर.पी. बढ़ाने में लगे हैं। इसका सीधा परिणाम यह है कि जहां धर्म के आधार पर ऐसे चैनल मालिकों को आर्थिक लाभ हो रहा है, वहीं ये कार्यक्रम जनमानस के मनोभावों को प्रभावित कर उन्हें अपने धर्म से जोड़ रहे हैं। इसी क्रम में 'हनुमान' पर बनी एनीमेशन फिल्म तथा रामायण जैसे धार्मिक ग्रंथ पर आधारित कार्टून सीरियल्स का भी उल्लेख किया जा सकता है।
5. ***पहचान का संकट (Identity Crisis):*** आज वैश्वीकरण के दौर में जब विश्वग्राम (Global Village) की अवधारण विकसित हो रही है, व्यक्ति अपनी पहचान खोता जा रहा है ऐसी स्थिति में धर्म उस सशक्त माध्यम के रूप में अपने को पुनः स्थापित कर रहा है, जो लोगों को इस पहचान के संकट से निजात दिला सकता है।
6. ***सूचना तथा संचार माध्यमों का प्रभाव (Effect of Information and Communication Medium):*** भारत में धार्मिक पुनःप्रवर्तनवाद के विकास के लिए सूचना और संचार माध्यमों ने महती भूमिका निभाई है। परिणामतः व्यक्ति दुनिया के तमाम समुदायों को धर्म के नाम पर गोलबंद होता हुआ देख स्वयं भी अपने धर्म से अभिन्नतः जुड़ने को प्रेरित होता है।

धार्मिक पुनःप्रवर्तनवाद का प्रभाव (Effect of Religious Revivalism)

स्पष्ट है कि भारत में धार्मिक पुनःप्रवर्तनवाद कई कारकों का समेकित परिणाम है। जहाँ तक इसके प्रभावों का सवाल है ये दो रूपों (सकारात्मक और नकारात्मक) में दृष्टिगत होता है, जिनकी विवेचना निम्नांकित तरीके से की जा सकती है:-

सकारात्मक प्रभाव (Positive Effect)

सामान्यतः यह माना जाता है कि धर्म सामाजिक, राजनीतिक व्यवस्था को बनाए रखने का एक महत्वपूर्ण साधन है और व्यक्ति के आंतरिक व्यक्तित्व से संबंधित आचरणों का नियामक भी

है। इस रूप में धार्मिक पुन:प्रवर्तनवाद जहाँ व्यक्ति के आंतरिक आचरण अथवा नैतिकता (Internal Conduct or Morality) को विशुद्धिकृत करने का प्रयास करता है वहीं सभी धर्मों तथा सम्प्रदायों के बीच सर्व-धर्म समभाव की धारणा के तहत सामाजिक समरसता की भावना को मजबूत करता है। वर्तमान में यह एक ओर व्यक्ति को आधुनिक मूल्यों से उत्पन्न पहचान के संकट से निजात दिलाता है तो दूसरी ओर भागम-भाग व तनावपूर्ण जिंदगी से उत्पन्न शारीरिक, मानसिक समस्याओं के प्रति आध्यात्मिक दृष्टि प्रदान कर मानसिक शांति प्रदान करता है। यही वजह है कि चाहे वह बाबा रामदेव का योग शिविर हो या फिर तमाम साधु-महात्माओं व संतों का प्रवचन कार्यक्रम, भारी संख्या में लोग उनमें भाग लेकर आत्म संतुष्टि प्राप्त करते हैं। इस प्रभाव को केवल हिन्दू धर्म में ही नहीं बल्कि इस्लाम, सिक्ख आदि धर्मों के संदर्भ में भी देखा जा सकता है।

नकारात्मक प्रभाव (Negative Effect)

धार्मिक पुन:प्रवर्तनवाद के नकारात्मक परिणामों को वस्तुत: धार्मिक मूलतत्ववाद द्वारा उत्पन्न की नयी अंधकट्टरवादिता के साथ जोड़ा जा सकता है। यह कट्टरवादिता (Fundamentalism) इराक में सद्दाम हुसैन के शासन के रूप में, अलकायदा, तालिबानी तथा तथाकथित इस्लामिक आतंकवादी गतिविधियों के तौर पर सामने आई। भारत में जहां कश्मीर समस्या तथा तमाम धार्मिक स्थलों पर हो रहे आतंकवादी हमले के तौर पर इसके परिणामों को देखा जा सकता है वहीं शिवसेना, बजरंगदल, विश्व हिन्दू परिषद जैसे हिन्दूवादी तथा सिमी जैसे मुस्लिम संगठनों की गतिविधियाँ भी धार्मिक कट्टरवाद के उदाहरण के रूप में व्याख्यायित की जा सकती हैं। अभी हाल में ही 'पब-कल्चर' के विरोध में श्रीराम सेना के कार्यकर्ताओं द्वारा कर्नाटक में किया गया असभ्य व्यवहार भी इसी श्रेणी का एक प्रमाण है। धार्मिक मूलतत्ववाद (Religious Fundamentalism) जनित धार्मिक कट्टरवादी गतिविधियों की त्रासदी यह है कि इससे न केवल विभिन्न धर्मों के अनुयायियों के बीच अविश्वास, वैमनस्यता (Animosity), विरोध तथा संघर्षात्मक प्रकृति में इजाफा होता है। वरन् ये सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक सभी पक्षों में विघनकारी प्रभाव डालकर राष्ट्र की एकता व अखण्डता को भी दुष्प्रभावित करते हैं। इन कार्यों से सामाजिक समरसता, समतामूलक समाज की स्थापना के लक्ष्य तथा शांतिपूर्ण सामाजिक जीवन का सत्यानाश तो होता ही है, साम्प्रदायिक दंगों के कारण धन-जन की जो हानि होती है और निर्दोष व्यक्ति बर्बरता से मारे जाते हैं। इसी धार्मिक कट्टरवादिता के तो परिणाम हैं। यह कट्टरवादिता जहां विभिन्न धर्मों के बीच वैमनस्यता को बढ़ावा देती है वहीं सामान्य नागरिकों में सामाजिक असुरक्षा की भावना को उत्पन्न करती है और अन्तत: इससे देश व समाज का विकास अवरुद्ध होता है।

भारत में धार्मिक रूढ़िवाद (Religious Fundamentalism in India)

मूलतत्ववाद या रूढ़िवाद (Religious Fundamentalism) का अर्थ किन्हीं मूल विश्वासों में आस्था तथा किन्हीं मूल सिद्धांतों का अनुसरण एवं उनके प्रति प्रतिबद्धता है। रूढ़िवाद का स्वरूप धार्मिक एवं गैर-धार्मिक दोनों हो सकता है। इस दृष्टि से फासीवाद अथवा साम्यवाद के रूप में सर्वसत्तावाद (Totalitarianism) को भी रूढ़िवाद का रूप कहा जा सकता है।

धार्मिक रूढ़िवाद किसी धर्म के व्यक्ति द्वारा उस धर्म के मूल सिद्धांतों में विश्वास, उनके मौलिक सिद्धांतों में आस्था या प्रतिबद्धता का वह रूप है जो धर्मांधता की सीमाओं को छूती है। जब किसी धर्म-विशेष के मतावलम्बियों द्वारा सारी दुनिया को अपने ही धर्म के संबंध में देखा जाता है और अपने परम्परागत धर्म को अंतिम सत्य के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया जाता है तो यह धार्मिक रूढ़िवाद कहलाता है। धार्मिक रूढ़िवादी अपने धर्म से इतर सभी जीवनशैलियों को भ्रष्ट जीवनशैली मानते हैं और इसको शुद्ध करने का प्रयास करते हैं, जैसे-मौलाना मौदूदी (भारत में जमायत-ए-इस्लामी के संस्थापक) ने वर्तमान जीवनपद्धति को अज्ञानी की संज्ञा दी और इसे भ्रष्ट बताया, भिंडरावाले ने 'पतित सिक्खों' का उल्लेख किया जो अपनी दाढ़ी बनाते हैं, अपने बाल कटाते हैं और परम्परागत सिक्ख पद्धति का पालन नहीं करते हैं। इसी संदर्भ में हम अफगानिस्तान के तालिबानियों और पाकिस्तान में लाल मस्जिद के मौलवियों के क्रियाकलापों की चर्चा कर सकते हैं। जिन्होंने परम्परागत मुस्लिम जीवनपद्धति को इस्लाम के अनुरूप माना और आधुनिक जीवनपद्धति का विरोध किया।

एक धार्मिक व्यक्ति होना तथा एक रूढ़िवादी होना एक समान नहीं है क्योंकि धर्म रूढ़िवादी नहीं होता। धार्मिक रूढ़िवाद धर्म का विलोम है, धर्म का शोषक है, जो सामान्य हितों को त्याग कर व्यक्तिगत हितों की पूर्ति हेतु धर्म को भ्रष्ट माध्यम के रूप में प्रयोग करता है।

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर धार्मिक रूढ़िवाद के निम्न लक्षणों की चर्चा की जाती है-

1. एक धार्मिक रूढ़िवादी अपने धर्म समुदाय अथवा इनसे जुड़े विश्वास व्यवस्था को अनिवार्य, यथेष्ट तथा पूर्णत: प्रमाणित मानता है।
2. रूढ़िवादी कभी समझौतावादी नहीं होते हैं बल्कि अपने विश्वास में धर्मांध एवं स्वरूप में अक्रामक होते हैं।
3. धार्मिक रूढ़िवाद के सिद्धांत अनुल्लंघनीय, आक्षरिक, निरंकुश तथा बाध्यकारी होते हैं। यह केवल अधिरोपण की जुबान समझता है और अपने मत को सही मानते हुए समस्त समाज को उस मत को मानने पर बल देता है।

4. धार्मिक रूढ़िवाद का स्वयं का मत होता है वह भले धर्म में हो या न हो परन्तु रूढ़िवादी अपने मत को तर्क द्वारा या धर्म की पुनर्व्याख्या द्वारा धर्मसम्मत सिद्ध कर देता है।
5. धार्मिक रूढ़िवादी विज्ञान एवं विवेकवाद दोनों को अस्वीकार करता है।
6. धार्मिक रूढ़िवादी अपने व्यवहार में उग्रता को प्रदर्शित करते हैं।

हाल के वर्षों में वैश्विक परिदृश्य में धार्मिक रूढ़िवाद एक महत्वपूर्ण घटना रही है। जिसे अफगानिस्तान में तालिबानी क्रियाकलापों, पाकिस्तान में लाल मस्जिद से जुड़े कट्टरपंथियों के क्रियाकलापों तथा भारत में बाबरी मस्जिद कांड के रूप में देखा जा सकता है। भारत में हिन्दू रूढ़िवाद ने जिस तरह के परिणामों (बाबरी मस्जिद विध्वंश कांड, इसाईयों को पुनः हिन्दू बनाया जाना, धार्मिक आधार पर तनाव, द्वेष और दंगों की घटनाएं आदि) तथा मुस्लिम रूढ़िवाद ने जिस तरह के परिणामों (कश्मीर में जेहाद, पैगम्बर या कुरान के विरुद्ध लिखने या बोलने वालों की हत्या का फतवा, तथा धर्म आधारित तनाव, द्वेष व संघर्ष में वृद्धि आदि) को उत्पन्न किया है इससे भारत में धर्म निरपेक्षीकरण की प्रक्रिया बाधित हुई है। आज इसके परिणामस्वरूप साम्प्रदायिक तनाव और दंगे बढ़े हैं। राष्ट्र कई समुदायों में विभक्त हो गया है तथा राष्ट्र निर्माण तथा आर्थिक विकास की प्रक्रिया बाधित हुई है।

भारत में धार्मिक रूढ़िवाद के लिये निम्न कारण उत्तरदायी रहे हैं-

1. नृजाति केन्द्रीयता की भावना और इसकी प्रतिक्रिया के कारण धर्म के आधार पर संगठित होने की प्रवृत्ति ने परम्परागत धर्म के महत्व में वृद्धि की है।
2. राजनीतिक दलों के द्वारा इसे मत एकत्रित करने (Vote Mobilisation) के आधार के रूप में प्रयोग किये जाने के कारण धर्म के प्रति लोगों की रुचि बढ़ी है।
3. कट्टरपंथियों द्वारा इस दिशा में किए गये दुष्प्रकार्यात्मक प्रयास के कारण धर्म के रूढ़िवादी तत्व मजबूत हुए हैं।
4. राजनीतिक एवं आर्थिक शक्ति प्राप्त करने की प्रवृत्ति (यथा राजस्थान और पंजाब के सीमावर्ती क्षेत्र के मेयो जाति) ने धार्मिक मान्यताओं के प्रति लोगों का विश्वास बढ़ाया है।
5. सामाजिक और आर्थिक विषमता, गरीबी, बेरोजगारी, अशिक्षा के कारण लोग पारंपरिक धर्म से चिपके रहना चाहते हैं।

इस तरह हम देखते हैं कि भारत में हिन्दू-मुस्लिम रूढ़िवाद यद्यपि कई कारणों का संयुक्त परिणाम रहा है, परंतु हाल के वर्षों में वैश्वीकरण जनित 'पहचान का संकट' की प्रतिक्रिया और विभिन्न धार्मिक समुदायों ने इसको और पुष्ट किया है और 'धर्म के बाजारीकरण' ने भी इसे जनाधार प्रदान किया है। अतः कुछ विद्वानों द्वारा इसे सकारात्मक संदर्भों में भी प्रस्तुत करने का प्रयास किया जा रहा है।

स्पष्ट है धार्मिक रूढ़िवाद वर्तमान भारतीय समाज के समक्ष एक गंभीर चुनौती है और इससे जनित खतरों से बचने के लिए धर्मनिरपेक्षता को सामाजिक आंदोलन के रूप में स्थापित करना होगा (शिक्षण संस्थाओं में, विभिन्न संचार साधनों के प्रसारों द्वारा) तभी धर्मनिरपेक्ष व अखण्ड राष्ट्र की परिकल्पना पूरी हो सकती है।

भारत में धर्म-परिवर्तन (Religious Conversion in India)

धर्म परिवर्तन को एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसके अंतर्गत व्यक्तिगत रूप से किसी व्यक्ति द्वारा या समूह के सदस्य के रूप में किसी व्यक्ति द्वारा अपने धर्म से भिन्न कोई अन्य धर्म ग्रहण करने का व्यक्तिगत निर्णय समाहित होता है।

भारतीय समाज में धर्म परिवर्तन एक ऐतिहासिक घटना रही है, परंतु हाल के वर्षों में सामूहिक रूप में बौद्ध धर्म ग्रहण करने की घटना या कुछ कट्टरवादी संगठनों द्वारा धर्म परिवर्तन की घटना को स्वार्थ सिद्धि हेतु धोखे से कराए गए धर्मान्तरण के रूप में देखा जाना और इनके प्रतिक्रिया स्वरूप विघटनकारी क्रियाकलापों को अंजाम देना तथा उन धर्मान्तरित हिन्दुओं एवं जनजातियों को फिर से हिन्दू बनाए जाने की घटना ने धर्म परिवर्तन को एक अत्यंत भावोत्पादक एवं संवेदनशील सामाजिक मुद्दे के रूप में महत्वपूर्ण बना दिया है जो भारत के धर्मनिरपेक्ष चरित्र के बिल्कुल विपरीत है।

भारत में इस धर्म परिवर्तन पर मुख्यतया दो दृष्टिकोणों से विचार किया जा सकता है-

1. ईसाई मिशनरियों द्वारा हिन्दू व जनजातियों को ईसाइयत ग्रहण करवाना जो मुख्यतया अंग्रेजों के आगमन के साथ ही प्रारंभ हो गया था।
2. हिन्दू दलितों द्वारा सामूहिक रूप से बौद्ध धर्मग्रहण करने की प्रक्रिया (नव-बौद्ध आंदोलन के रूप में अम्बेडकर और कामराज के नेतृत्व में हिन्दू दलितों द्वारा सामूहिक रूप से बौद्ध धर्म अपनाया जाना)।

भारत में धर्म परिवर्तन के उपरोक्त दोनों संदर्भों के लिए मुख्य रूप से निम्न कारक उत्तरदायी रहे-

1. असमानतामूलक एवं शोषणकारी (Inequitable and Exploitative) जाति व्यवस्था ने शोषित वर्गों को अपने धर्म के प्रति उदासीन बनाया है।
2. गरीबी एवं आर्थिक पिछड़ेपन के कारण लोगों ने अन्य धर्मों में विकास की सम्भावनाओं की तलाश की।
3. तुलनात्मक अभाव बोध के कारण भी लोग अन्य धर्मों के प्रति आकर्षित हुए।

4. दु:ख, निराशा एवं संघर्ष की स्थिति ने उनमें धर्म से विमुखता उत्पन्न की है।
5. अशिक्षा के कारण, अन्य धर्मों में जहां शैक्षिक अवसरों के आकर्षक विकल्प थे, की ओर लोग उन्मुख हुए।
6. प्रस्थिति उन्नयन (Status Upgrade) की सम्भावना के कारण भी लोगों की रुचि समतावादी धर्मों की तरफ हुई।
7. इस दिशा में अभिप्रेरित करने वाले व्यक्ति या समूहों की भूमिका भी धर्म परिवर्तन हेतु महत्वपूर्ण रही।

भारत में धर्म परिवर्तन की उपरोक्त प्रवृत्ति, इसके कारण तथा इसकी प्रक्रिया में उदित नवीन घटनाओं के संदर्भ में निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि स्वतंत्र भारत में जहाँ धर्मनिरपेक्षता के साथ-साथ व्यक्ति और धर्म के साथ भावनात्मक संबंधों को भी स्वीकार किया जाता है। वहीं सभी नागरिकों को अपनी इच्छानुसार धर्मग्रहण करने का अधिकार है। जो आदर्श समाज की संरचना में एक महत्वपूर्ण कदम है। परंतु धर्म-परिवर्तन धोखे से कराया जा रहा है तो यह निंदनीय है, गैर-कानूनी है, समाज के लिये दुष्प्रकार्यात्मक (Dysfunctional) है और ऐसे कार्यों को रोका जाना चाहिए परंतु उन्हें भी हतोत्साहित करना चाहिये जो धार्मिक कट्टरवाद से अभिप्रेरित होकर व्यक्ति के स्वैच्छिक धर्म-पालन को बाधित करते हैं।

चूंकि भारत में धर्मान्तरण की सभी घटनाएं कहीं न कहीं ढकेलने वाले कारकों (Push Factor) से अधिक संबद्ध रही हैं, अत: इस समस्या का सकारात्मक समाधान भारतीय समाज का शैक्षणिक एवं आर्थिक समानुपातिक विकास करते हुए हिन्दू सामाजिक संगठन में विद्यमान दबाव कारकों अर्थात् उन कमियों को दूर करना भी होना चाहिए जिसके कारण हाशिये पर खड़े लोगों को अपनी वंचना की पुष्टि हेतु अन्य धर्म को ग्रहण करने की ओर उन्मुख होना पड़ता है। तभी एक आदर्श, आधुनिक बहुलक समाज के लक्ष्य की प्राप्ति संभव हो सकेगी।

भारत में धर्म : संभावित प्रश्न

1. धार्मिक पुन: प्रर्वतनवाद की घटना ने धर्मनिरपेक्ष भारत के निर्माण के लक्ष्य को किस प्रकार प्रभावित किया है? समीक्षा करें।
2. धार्मिक रूढ़ीवाद भारत में आधुनिकीकरण के समक्ष एक प्रमुख बाधा के रूप में उपस्थित हुआ है। समीक्षा करें।
3. क्या भारत में धर्म-परिवर्तन व्यक्तिगत धार्मिक स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति है? समीक्षा करें।
4. भारत में धार्मिक पुन:प्रर्वतनवाद की घटना को स्पष्ट कीजिए।
5. भारत में धार्मिक रूढ़िवाद की समस्या पर टिप्पणी कीजिए।
6. धर्म एवं पहचान संकट पर एक टिप्पणी लिखिए।
7. समकालीन भारत में धर्मान्तरण की समस्या के सामाजिक आयामों को दर्शाइए।
8. धार्मिक रूढ़िवाद एवं धर्मनिरपेक्षता के मध्य परस्पर विरोधी संबंधों की चर्चा कीजिए।
9. समकालीन भारत में धर्म एवं राजनीति के मध्य संबंधों पर टिप्पणी कीजिए।
10. धर्म के बाजारीकरण से आपका क्या तात्पर्य है? इस घटना ने भारतीय समाज को किस प्रकार प्रभावित किया है?

✪✪✪✪✪